आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 11-09-14

हर रोज अपने महावाक्यों से हमें सहज पुरुषार्थ करवा कर, आप समान संपूर्ण-पावन बनाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - अभी तुम यहॉ बैठे हो, तो तुम्हारा बुद्धियोग घर में, बाप में और राजधानी में है. यह तो पक्का-पक्का याद कर लो क्योंकि यह तो गायन है अन्त मति सो गति.

बाबा ने आज सारी मुरली में हमें बार-बार अपने घर की, बाप की और नई दुनिया की याद दिलाई और हमारी बुद्धि को प्रैक्टिस कराई की कैसे हमें यह तीनों को बार-बार याद करना है.

मीठे धर की, मीठे बाबा की और मीठी नई दुनिया के बारे में बाबा ने जो भी महावाक्य आज मुरली में कहे, उसे एक बार आत्मा-अभिमानी बनकर पढेंगे तो हमें अच्छी याद करने कि प्रैक्टिस होगी.

मीठे घर-परमधाम, मीठे बाबा और मीठी नई दुनिया की याद के लिए कहे गये महावाक्य -

- यह सिर्फ तुम बच्चे जानते हो, की हम आत्मायें दूरदेश की रहने वाली है और दूरदेश में रहने वाले बाप को भी बुलाते हो कि आकरके हमको भी वहॉ दूरदेश में ले जाओ. अब दूरदेश का रहने बाला बाप तुम बच्चों को वहॉ ले जाते हैं.

- तुम रुहानी पैसेन्जर्स हो क्योंकि रुह ही ट्रैवलिंग करेगी. रुह कहॉ जायेगी? अपनी रुहानी दुनिया में. बच्चों को बाप ने समझाया है अब धर वापस जाना है, जहॉ से पार्ट बजाने यहॉ आये हैं. अभी यहॉ तुम पढ़ रहे हो, जानते हो भगवान शिवबाबा हमको पढ़ाते हैं. भगवान तो सिवाय इस पुरुषोत्तम संगमयुग के सारे कल्प में कभी पढ़ायेंगे नहीं.

- पढ़ाई भी कितनी सहज है, अब घर जाना हैं. लेकिन हम जब तक पवित्र नहीं बने हैं तो घर जा नहीं सकेंगे. बाप को याद करते रहेंगे तब ही उस योगबल से पापों का बोझा उतरेगा. अब पवित्र तो जरूर बनना है.

- बाप बैठकर समझाते है, जैसे तुम परमधाम से यहॉ आते हो पार्ट बजाने, वैसे मैं भी आता हूँ. तुम मुझे निमंत्रण देकर बुलाते हो - हे बाबा, हम पतितो को आकर पावन बनाओ. देखो

और कोई भी आत्मा के लिए ऐसे नहीं कहेंगे, अपने धर्म-स्थापक यॉ धर्म-गुरुओं के लिए भी ऐसे नहीं कहेंगे कि आकर हम पतितो को पावन बनाओ, सिर्फ बाप को ही पतित-पावन करके बुलाते हैं.

- यहॉ से वापस घर जाने का रास्ता बतलाने वाला, सर्व का सद्गति करने वाला, सच्चा सतगुरु, अकाल मूर्त एक ही बाप हैं. वह सतगुरु स्वयं ही आकर अपना परिचय देते है - मैं तुम्हारे मिसल जन्म नहीं लेता हूँ. यहॉ तुमको रुहानी बाप बैठ समझाते हैं. अब तुम्हारी बुद्धि में है की यह चक्र कैसे घुमता है.

- गीता में लिखा हुआ है मनमनाभव, यह अक्षर तो मशहूर है. सारी आयु गीता पढ़ते आये लेकिन कुछ समझते नहीं थे. अब वही गीता का भगवान बैठ सिखलाते है, मीठे बच्चे - अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो पतित से पावन बन जायेंगे.

- अब बाप कहते है - बच्चे, मुझे याद करते हो? ऐसे कभी सुना कि बाप बच्चे को कहे तुम मुझे याद करो. यह बेहद का बाप बैठ समझाते है. तुम सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त को जानकर चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे. पहले तुम जायेंगे घर फिर आना है पार्टधारी बनकर.

- बाप बैठ समझाते है - हे आत्माये तुम कितना जंगली कांटा बन पड़े हो, दूसरों को कांटा (दुख) लगाते हो तो तुमको भी कांटा लगता है. रिसपोन्ड हर बात का मिलता है. वहॉ दुख की छी-छी बाते कोई होती नहीं इसलिए उनको कहा जाता है स्वर्ग.

- अब तुम जानते हो - यह मुक्तिधाम (मूलवतन) तो आत्माओं का घर है. मूलवतन का राज तुमको बाप बिगर कोन समझायेंगे. तुम्हें सारी दुनिया को मैसेज देना है - बाप आये है, सिर्फ कहते है मामेकम याद करो. वह बाप ही सब आत्माओं का लिबरेटर है, गाइड है. बाप कहते है, जो बहुत याद करते है, दूसरों को भी आप समान बनाते है, कांटों को फूल बनाते है वह सतयुग में बहुत ऊँच पद प्राप्त करते है. ॐ शांति.